आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 25 March 2022   **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आईये अब श्रेष्ठ संकल्प रचने का पुरुषार्थ करे, बाबा साथ है, उनकी शक्तियाँ मेरे साथ जुड़ी हुई है "*

जीवन की यात्रा को हमें सुखों से भरना है। और यह जान ले कि सुखी रहना हर मनुष्य के अपने हाथ में है।

अपने ही संकल्पों से मनुष्य दुःखी रहता है। अपने ही संकल्प उसे बहुत शान्त करते है। अपने ही संकल्प उसे कमजोर करते है, या बहुत शक्तिशाली बनाते है।

एक उदाहरण ले ले ...

एक बहन को दुसरी बहुत सारी बहनें कुछ कुछ कहती है। उससे वो डिस्टर्ब रहती है। और वो यह सोचती है ...

" यह मुझे बूरा बूरा बोलती है। यह कब मेरा पीछा छोड़ेंगे? यह तो सदा बोलते ही रहेंगे। "

बीसों साल उनके सुनते सुनते यह आत्मा दुःखी रहती है। इसको बहुत फीलिंग होती है। इसका ईश्वरीय सुख नष्ट हो जाता है। यह उसका एक विचार है ...

" यह मुझे बूरा बोलते है। यह पता नहीं मेरा पीछा कब छोड़ेंगे? "
इस विचार को यदि वो चेंज कर दे इसतरह के ...

" **बाबा ने कहा है** मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, हार-जीत, सुख-दुःख में तुम्हे समान रहना है। हम उनके वचनों को बहुत ध्यान देते है। अभी हम ध्यान दे बाबा के वचनों पर। "

और संकल्प कर ले ...

" इनका काम है बोलते रहना। और मेरा काम है एकरस रहना, मुस्कुराते रहना, अचल-अडोल रहना। "

तो वही परिस्थिति जो इनको कमजोर कर रही थी अब इनको महान शक्तिशाली बना देगी। और जब इनकी स्थिति शक्तिशाली बन जायेगी तो सब इनको बोलना भी छोड़ देंगे।

यह रहस्य भी सब जान ले कि ...

" बोलते भी मनुष्य तब तक ही है जब तक हम बहुत ज्यादा फ़ील करते है। अगर हम मुस्कुराकर अपने फीलिंग को बिदाई दे दे तो बोलने वाले भी समझ जाते है के हमारे कटु बचनों का इनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। "

तो आईये हम सभी अपने विचारों को बदले। पाजिटिव करे। दुसरों के संकल्पों के सदा ही हम अधीन न हो जाये। हमारे पास महान संकल्पों का महान खज़ाना है। हम उसको पहचाने। हम उसको याद करे।

हम अपने बुद्धि के अलमारी को खोलकर तो देखे। हमारी बुद्धि में कितना खज़ाना भरा हुआ है। ज्ञान का भी और श्रेष्ठ संकल्पों का भी। उसको यदि हम याद करेंगे तो हम सदा आनन्द में रहेंगे।

तो पहचाने अपने इस महान खजाने को। और स्वीकार कर ले कि श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना पाजिटिव संकल्पों का खज़ाना है। यह खज़ाना है, केवल संकल्प नहीं है। यह हमारी बहुत बड़ी सम्पत्ति है।

जैसे कोई मनुष्य बहुत सम्पत्तिवान है, परन्तु उनके विचार बहुत निगेटिव और कमजोर है तो वो दुःखी रहेगा, अशान्त रहेगा, असन्तुष्ट रहेगा। तो उसको उस खजाने का कोई लाभ भी नहीं होगा।

लेकिन किसी के पास धन का खज़ाना बहुत कम है, लेकिन उनके पास श्रेष्ठ संकल्पों की पूंजी के भण्डार भरे हुए है। तो वो हर हाल में संतुष्ट रहेगा। खुश रहेगा। उनके जीवन शान्ति से भरपूर रहेगा।

तो हम अपने अंदर छुपे हुए इन महान खजाने को पहचानकर इनका यूज़ करे। सचमुच संकल्पों के खजाने से बढ़कर खजाना और कोई नहीं है। स्वयं भगवान ने भी कहाँ है ...

" श्रेष्ठ संकल्पों की एनर्जी ही भाग्य की एनर्जी है। अर्थात यह शक्ति ही तुम्हारे श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करती है। "

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान में रहेंगे ....

" मैं फरिश्ता हूँ .. सर्व ईश्वरीय खजानों से भरपूर फरिश्ता हूँ .. इस संसार को बहुत कुछ देने के लिए अवतरित हुआ फरिश्ता हूँ .. मेरे अंग अंग से रंग बिरंगी किरणें फैल रही है "

इसकी बहुत गुड फीलिंग हम करेंगे सारा दिन और साथ साथ यह भी अभ्यास करेंगे कि ...

" बाबा की शक्तियाँ मुझ फ़रिश्ते के साथ सदा ही जुड़ी हुई है अर्थात उसकी शक्तियाँ का फाउन्टेन निरंतर मुझ पर उतर रहा है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org